

1. पाण्डव गीता PĀNḌAVA GĪTĀ
2. चण्डी CANDĪ

DPN 6724

Title :

Run. No. 7450

Cat. No. 19

Micro. No.

Subject

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 19 x 9

Folios 17

Lines (in a page) 6 irregular

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

डा. कमलप्रकाश मल्ल

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Ruler / place Dr. Kamala Prakash Malla

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Folio - 7 - कृष्णाय वासुदेवाय देवकि नन्दनाय च ।
नन्द गोप कुमाराय गोविन्दाय नमो नमः ॥

P.T. O.

इति मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये निशुंभ वधो नाम
तवमो ध्याय ॥

ॐ ह्रस्वर्जलिगुल गूलामहावलह्रस्वर्जलिगुल ॥ ध
रवकीपात मायतिम्ल लखनू उभयिदिन वरुलामिका
हंछ ॥ ॥ ॐ संदिगसीगंखाहा ॥ १००८ मा जना ॥ ॐ ॐ ॐ
गमजयजयायखाहा ॥ महुदंया ॥ ॥ ॐ नमा ॐ वलवंच
लवनखंदुगायूवा नधूनकेवाघनखायू नवलगुसायि

सुमत्रकायाञ्चलसुसाङ्गं वाचनहायि॥ ५० ॥ धनं धिय
मरुत्तुनख्यमरुत्तुसग्वललाहाङ्गवलनमुपगयख
वियशुगदसतयकलपडाननञ्ज॥ ॥
ॐ ॐ महिरुमंदलदुनिद्रि नधत्तुषिह नहनिनुरुट्खाहा॥
लगवनिपूजाधनखवानलोगमालवानद्वायसडुननासा॥

नागिरतिसरनरघुनाथआसाभलोसातुमारिसरन
आसाभलोसात्परेकोटेतिसुकोटिदेवतामेरेकोअईअ
ईमयितिमाम्सरनधराभाजुतेरेकोपिनामनकाभु
नादेविम्यन्यकोगनविताईआयिहोचनुकधारिखव
रलेनाहोहमारिरांमनामसुनबोलनादेवकिपिदेर
हनाशिरंजनशिराकालमेरेरुणपुमातमा॥ मंत्र॥

३ गुरुकुलारिकिवाचागुरुमाविरकिवाचागुरुपंच
हलुमानकिवाचागुरुगोरषनाचकिवाचागुरुनर
सिंहकिवाचायहिपाचगुरुकिसनेवाचा ॥ ॥

ॐ श्रीजादेसुतिनमंदलमेरेपिदेयरिअकासवाधुमं
दलवाधुपतालवाधुमुसानवाधुनेतवाधुनेतवाधुपे
तवाधुपिसासवाधुदांकिनिवाधुसंकिनिवाधुवतीवाधुमु

गुरु३

वाधु

॥ कृष्णाय वासुदेवाय देवकिं नन्दनायक ॥ नन्दगोपकुमाराय गो
विन्दाय नमो नमः ॥ ३१ ॥ सोमदत्त उवाच ॥ नमो परमकस्या नमः ॥
नमो विष्णवे नमः ॥ वासुदेवाय सांताय जगदुनाय तये नमः ॥ ३२ ॥
॥ विराट उवाच ॥ नमो ब्रह्मणे देवाय गोब्रह्मणे हिताय च ॥ जग
द्भुताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥ ३३ ॥ सत्य उवाच ॥ ॥ अ

नमः

तस्मीपुष्पसंकासं पीतवाससमचुतं ॥ येनमसेति गोविन्दं न ते पां
डि ॥ विद्यते नयं ॥ २४ ॥ **वल्लभ उवाच ॥** कृष्णकृष्णकृष्णतो नो मंग
तिर्वांगतिर्न वै ॥ संसार एव न मन्माणां सुखसिद्धयुक्तमपि ॥ २५ ॥
॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ कृष्णकृष्णेति कृष्णेति यो मां स्मरंति नित्यतः ॥
जले नि त्वा जथा पद्मं नरकाद्दुःखमेहं ॥ २६ ॥ सत्यं वी भिमनुजा

राम

७

मंत्रोक्तिं वागसि वसवर्त्तिनि ॥ तत्रापि नरके घोरं यत्तं तिष्ठेत्तददु
तं ॥ २७ ॥ **॥ दामोदर उवाच ॥** किं तस्य बहुभिर्मंत्रैश्च किं स्य जनाद
नं ॥ नमो नारायणायैति ॥ मंत्रसर्वाश्च साधकः ॥ २८ ॥ **वैशम्पायण**
उवाच ॥ जत्र जोगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ॥ तत्र श्रीविजयो
मुक्तिर्ध्वानीति मतिर्मम ॥ २९ ॥ **श्रीगीर् उवाच ॥** हरिहरतिमाया

नारु

निद्रासिद्धैरपि स्मृतं ॥ अनिद्रायापि संस्पृष्टेऽदरुते वह्निवावक

॥ ७२ ॥ पशुसंख्येयं ॥ स कृदुच्चरितं येन हरिरित्यक्षरद्वयं ॥ रागा ॥

वद्वापरिकरस्ते न मोक्षाय गमने प्रीतिः ॥ ७३ ॥ यौल्लेख्येऽवयव ॥ १४

हे जित्केरससारज्ञे सर्वदा मधूरप्रिये ॥ नारायणस्य यीयुषं पिवजि-

ह्वे निरंतरं ॥ ७४ ॥ वासुदेवाय ॥ सत्यं सत्यं पुन सत्यं भुजमुत्थाय

नयानि ॥ श्रीगिरारंभलाई चरनपादुका नमस्तुते ॥

अद्यो रत्र अद्यो रमंत्र ॥ पंचासकोति देवता मये भवंति

पृथिवि ॥ मध्ये रिद्धि सिद्धि पुरंति ॥ अभेद मंदल भेद

दंति अद्वैत पापक्षेदंति ॥ अर्षकोप करयंति तारंति ॥

सरिरार्थवदराखंति ॥ ईशुको वचने वचने गंगा जमु

नामोक्षे रंति ॥ वैचलिसुखा भुवलि सिद्ध ॥ अपि पंथना

[illegible]

का लि न्या स
 का पा वा स्व का य स क ल प ॥ ॥ ग्रा दा ह न म् कृ ता कि ल ॥
 ३ ॐ नृ द स न् अ नि क पा लि सि व ग म् वृ ज् ज मा न ना म स र् अ ने प्रा
 स ना क पू जा स र् न या मि ह ॥ ॥ अ प न पू जा ॥ ॥ स ना न या न् वा ॥ ॥
 ४ ता ह प स पू जा ॥ य द न र् न र् न ज् ज का य स्या द् द ह र ल रू त क
 य म त वि ॥ ॥ ॐ व नू ना य न मः आ पा प नू न मः गं ग य न मः अ मृ ना
 य न मः वे ङ्ग म दा व नि स न् वा व तिः नृ म दा सिं द् का व लिः अ ना स्मि

गुरुनागपयागकिर्मकाक्षा लातिरीषम ॥ अयां तीव
क्रियया लोसानि न कामहात्कया ॥ ३३ ॥ सिंहनादन
गुरुस्य व्याफलो कप्रयां गन ॥ निर्घागनिः स्वनाधाभा डि
नवानवनीपम ॥ २४ ॥ गुरुमूक्तानमना नदवी गुरुसुस्र
हिगाऊना न ॥ विरुदस्वगने नूत्रेः गगलमथसहमृगः
२५ ॥ गगः सावंडिका कृष्णमलेनाहिक घानगं ॥ सागदा
रिहमाहमोमर्किगानिपयागह ॥ २६ ॥ गगानिगुरुः

६०

नाग्यनिगंमम ॥ २७ ॥ मषि नूवाव ॥ ०० ॥ पूकामा
एगवगीवंडिका वंठविकमा पणपताभवदवाना
गणैवांगनधीयग ॥ २८ ॥ गपिदेवानि नाटंकाः सा
धिकानानयथापूरा ॥ यरुलागगुरुः सर्ववक्र
विनिहिता नयः ॥ ३० ॥ देव्या गवद्व्यानिहने गुरु
देवनिधायुधिः ॥ डगदिधं सिक्तास्मिन्महाये

वंडि
११

उलविज्जम ॥ ३१ ॥ निगुंरुवमहावीर्यः षाषायातालमा
ययः ॥ उवंरगवगीदवीस्तानिपामिपुनः पुनः ॥ ३२ ॥
संखयकृत्तरूपजगतः परिपालने ॥ तथैतन्मा
हृगविश्वंसेवविश्वं प्रसूयते ॥ ३३ ॥ सायाविगाव
विज्ञानं गुह्यमहिप्रयच्छति ॥ माफं तथैतत्सकलं व
ह्यार्धमनूजं गेन ॥ ३४ ॥ महाकाल्यामहाकालमहा ११

मानीस्वरूपया ॥ सेवकालमहामानीसेवसुखिर्हवप
जा ॥ ३५ ॥ स्थितिकनानिरुगानासेवकालसनागनि ॥ ल
वकालेन तंसेवलक्ष्मीर्हृदिप्रदायह ॥ ३६ ॥ सेवालावे
तथा लक्ष्मीर्विनागमयायजायते ॥ सुतासंपूजितापूष्य
र्क्षपगंधादिहिसुथा ॥ ३७ ॥ ददामि वित्तं प्रयाग्यमतिं
धर्मतथा गुणं ॥ ३८ ॥ ॐ निमार्कः पुनः पुनः लासाव
सिक्कमन्तं तत्र देवीमाहात्म्यं देवीवार्कः छादगमध्यायः ॥ ३९ ॥

वंछि ॥ अषिरुवाव ॥ नृगकथि गंरूपदवीमात्स्यमरुमं ॥ नवंष
१८ एवासादवीयथदंभयनङ्गत् ॥ १ ॥ विद्यातत्थेवक्रिय
नृगवदिष्टुमायया ॥ नयात्त्वमषवे ग्धग्धनत्थेवान्
विवक्तिनः ॥ २ ॥ माकंनमाहितात्थेवमाहमष्यगिवाप
न ॥ नामपेहिमहानाङ्गनरसंपनमग्धनी ॥ ३ ॥
आनाधिनासेवनृसंगस्वर्गपवर्गदा ॥ माकंउयउ
वाव ॥ ॐतिगस्यववः गूत्वास्तनथः सननाधिपः ॥ ४ ॥

१८

१ॐ नमोऽश्विनसुतः ॥ अतितसूर्यः निग
 कात्रमध्यः गुणसिद्धिः सर्वः मूनिध्याननीयः श्रीदेव
 रक्तसदाङ्गगङ्गा ॥ प्रवर्कसाक्षात्ः अलखदेव ॥
 श्रीनाथनाथप्रनैलङ्ग ॥ १ ॥ अङ्गनिसूर्यः नकि १
 थगानजातिः तालनमालनैः निजवर्धवर्न ॥ प्रवर्क
 साक्षात्ः अलखदेवः श्रीनाथनाथप्रनैलङ्ग ॥

॥ २ ॥ शुधनैवधनैः सदासावधनैः अहितनैवा
 नैः सदासिद्धिः अगिववकवीगान ॥ सदाह्यानगङ्गा
 अकवप्रपीतिहिष्ठाः अकलनिवाह ॥ प्रवर्कसाः
 साक्षात्ः अलखदेवः ॥ श्रीनाथनाथः सप्रनैलङ्ग ॥ ३ ॥
 सतत्रपितैः नवधनुवुनैः अतिसूर्यः अतितसूर्य
 यैः गुणकात्रदेवैः सङ्कजङ्ग अहात्रयूनवर्न ॥ अकि

१ नोमकु कसर्व ॥ प्रवर्का साक्रात् ॥
 नाथ नाथ सत्रनरुजहं ॥ ४ ॥ वशाद नृदिन ग्रहः
 सनु कसर्व नृहा गान नकु जर्पः त्रिका न सदा कान
 २ आगिव नृहं ॥ प्रवर्का साक्रात् ॥ गल कंदर्व ॥ श्रीना २
 थनाथ सत्रनरुजहं ॥ ५ ॥ नृहं नृहं नृहं नृहं
 दं नृ ॥ श्रीनाथ नाथ गल खनाथ ॥ प्रवर्का साक्रात्

पुष्पं नमः ॥ आवाहनपुजा ॥ त्रिंजलि ॥ श्रीं श्रीं श्रीं चिंतामणि विनायक
 श्रीपापु ॥ श्रीवलि ॥ पुसुरा ॥ आवरनपुजा ॥ त्रिकुं नमः ॥ येई द्वाये
 नमः ॥ येज्ञानये नमः ॥ येकयाये नमः ॥ वतं कुं रास ॥ गौं दृडयाय न
 मः ॥ षडगपुजा ॥ असकु नमः ॥ अं वली नै नमः ॥ कं माहे सोर्जे नमः ॥ चं को
 मार्ये नमः ॥ तं विलुबे नमः ॥ ठं वाराहे नमः ॥ यं ईन्द्राय नमः ॥ यं चामुन्दा
 ये नमः ॥ रां माहारक्षी नमः ॥ पुजा ॥ अं अनिमासि र्थो राम ॥ कं लक्ष्मि मासि
 र्थो राम ॥ चं महि मासि र्थो नमः ॥ दं ईसित्व सि र्थो नमः ॥ तं वसितो सि र्थो नमः

मा॥ पं॥ का॥ म॥ सि॥ र्धो॥ रा॥ म॥ यं॥ भु॥ कि॥ सि॥ र्धो॥ न॥ म॥ सैं॥ ई॥ द॥ सि॥ र्धो॥ रा॥ म॥ लें॥ प्रा॥
 पि॥ सि॥ र्धो॥ न॥ म॥ धैं॥ सर्व॥ का॥ म॥ सि॥ र्धो॥ रा॥ म॥ द्वा॥ र॥ स॥ लें॥ ई॥ द॥ य॥ न॥ म॥ रैं॥ अ॥ ग्रे॥ य॥
 ३ रा॥ म॥ मं॥ य॥ मा॥ य॥ न॥ म॥ धैं॥ रौ॥ ऋ॥ ते॥ ए॥ न॥ म॥ वैं॥ व॥ रु॥ ना॥ य॥ न॥ म॥ यैं॥ वा॥ र्दै॥ व॥ रा॥ म॥
 सैं॥ कु॥ वे॥ ला॥ य॥ न॥ म॥ हैं॥ ई॥ सा॥ ना॥ य॥ न॥ म॥ अं॥ अ॥ न॥ ज्ञा॥ य॥ रा॥ म॥ उं॥ व॥ ह्नि॥ न्ये॥ रा॥ म॥ ड॥
 पु॥ ज्ञा॥ श्री॥ गुं॥ श्री॥ सां॥ गा॥ य॥ स॥ वा॥ ह॥ ना॥ य॥ स॥ परि॥ काला॥ ए॥ सा॥ नु॥ च॥ ला॥ य॥ श्वा॥ व॥ ल॥ रा॥
 ए॥ श्री॥ म॥ न॥ चि॥ त्ता॥ म॥ नि॥ ग॥ रा॥ प॥ ट॥ य॥ श्री॥ पा॥ पु॥ पो॥ ते॥ व॥ लि॥ पु॥ जा॥ ३॥ थ॥ व॥ मा॥ ल॥ के॥

पु॥ जा॥ व॥ लि॥ मु॥ ले॥ पु॥ प॥ डि॥ प॥ नै॥ वि॥ दे॥ त्र॥ पे॥ न॥ ता॥ य॥ हो॥ ले॥ ज॥ प॥ तो॥ स्त्र॥ मा॥ ल॥ के॥
 जु॥ ले॥ पो॥ या॥ पु॥ र॥ स॥ च॥ न॥ ल॥ क्षि॥ ॥ ३०००००॥ अ॥ थ॥ पु॥ जो॥ गा॥ उ॥ व॥ सो॥ या॥ व॥ धे॥ ल॥ म॥
 न॥ च्या॥ य॥ ज॥ प॥ रा॥ ना॥ नं॥ सि॥ धि॥ ॥ च॥ त्रु॥ ड॥ सि॥ पु॥ ष॥ न॥ क्षा॥ त्र॥ आ॥ दि॥ ते॥ वा॥ र॥ खु॥ द्दु॥ आ॥ रं॥
 भ॥ या॥ य॥ द्दु॥ २१॥ त॥ क्षि॥ रा॥ दो॥ १०००॥ या॥ य॥ कु॥ ल॥ ग्र॥ ह॥ सा॥ ड॥ सा॥ ड॥ के॥ पु॥ र्द॥ के॥ व॥ से॥
 थो॥ ध्य॥ त॥ क॥ स्ति॥ ना॥ प॥ ध्या॥ य॥ हो॥ म॥ या॥ य॥ द्वि॥ न॥ १०८॥ म॥ न॥ न॥ आ॥ ल॥ पा॥ का॥ र्ज॥ सि॥ धि॥ र॥
 १०८॥ त॥ चि॥ कि॥ गो॥ ले॥ भ॥ ता॥ कि॥ मि॥ या॥ ति॥ रा॥ जा॥ कि॥ स॥ वा॥ ला॥ व॥ हों॥ या॥ य॥ १०८॥ ग॥ म॥
 न्य॥ स॥ या॥ हो॥ न्ये॥ नौ॥ नि॥ या॥ क॥ तां॥ म॥ रि॥ द॥ य॥ क्य॥ गो॥ ह्म॥ मा॥ ल॥ व॥ ह्म॥ या॥ नां॥ म॥ न॥ हो॥ म॥ या॥

५
१०
एदको वसे॥ चौ वरुसिवा॥ होम्याए कं न्या वस्य मा मय दुं मदि सां य म नं व
ई॥ कं भता एहाय्यल नवा ला होम्याए॥ १००८॥ कं भता या पु पु प थ न्य
४ वसे॥ चत्रुदसिषु रु क्सि चेल होम॥ १००८॥ हाम दान या य का वं थ॥ दु
दुष्यल ना प जा य होम॥ १००८॥ गोल च न रा मंत्र ए ना व मि वा श उ ले द को
वसे॥ अथ ग रो श या मुं॥ मुर्ति दय के॥ स्पं ता क म या ए द व श्री ध नु
न त्र व म्या क य ल स च ना गु दं त न मुर्ति दय के माल॥ ग रो श यि य कं
त य नि त्पे पु जा माल॥ हाम ल नै वि दे द्य य दु दु चेल क्सि वा ला होम॥

५
१००८॥ द्वि पं द ल वा ल न भो ज रा या त क्य॥ १०८॥ योग न्य स मु गु ति ला का॥ ज व
ल पु स धा य रा जा व स्य॥ ई का चि क न श वु ला व हो म॥ १०८॥ आ क र्ष न॥
हरि द्रा मं च त्रु वा रु हारि त व श रा वि भु पा सा कृ स च त्र दे व मो ड कं द न मे व॥
ॐ मंत्र॥ हुं गं गूं ह रि द्रा ग न प त र व र व र द श र्व ज न स्य ह स सं भ रा कृ रू कृ रू
स्या हां॥ ॥ ॐ गूं स्वा हा॥ मंत्र यो चिं ता म नि ग ने स या पु जो ग॥ ॥

त्रगरिभथारं॥ अस्ति रजेयकं कालः अजया जयसुन्यमनध
रो॥ यं यभुन आत्माय कं त्रकलोः कवन संख स्वामी आये प्रवे
स॥ कवन संख स्वामि मर्द्ध देह एवाजेः कवन संख स्वामिति
नी भुवन साजे॥ कवन संख स्वामि अनं त्र सिद्धि कान दर्शन
हो अ॥ ईश्वर वाच॥ सुनो देवी वार गण॥ सह जा संख आ
या प्रवे सः सुवायु संख मर्द्ध देह एवाज्य॥ जिवं त्र संख श्री मुद्र

गाजेः अतितसंख्यारिखंदसाजेः सिरसंख्य अनन्नसिद्धकान्यद्र
शनहोज्य ॥ यधियुगागायत्रिसार ॥ ॐ नमोऽशिवाय २ श्री
संभुवरनयादुकानमोस्तुत्यं ॥ ॥ एता एकं मृत्युसंख्यसमुप ५
दाः वरकर्ता हरंत्य ॥ यायसोस्तीमुद्ये अवरंते संज्यायुभाते उ
वारंति विवारंति ॥ यायनरहे पत्रयुषिठहरंटे मृत्युरेक आ
याभवेत् ॥ ॐ नमोऽशिवाय २ श्री संभुवरनयादुकानमोस्तुत्यं ६
सुखं ॥